Item Code: 645   Participant Code: 043

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശൂർ
തീയതി 17/1/26
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

विकसित भारत की उड़ती चिड़ियाँ

हमारे भारत की आबादी की ओर देखा जाता तो हमे यह देखने को मिलेगा कि हमारे भारत में ~~मर्दा~~ मर्दों से ज्यादा महिलाएं पाए जाते है। लेकिन वही चीज हम रोजगारी की तरफ मुड़कर देखे तो हमे यह देखने को मिलेगा कि महिलाओं से ज्यादा रोजगार ~~मर्दे~~ मर्दे है। यह एक बहुत ही प्रासंगिक और चर्चा करने वाली बात है।

अगर हम कुछ सदियों पहले कि बात करे तो हमे नारियाँ अपने हि घर मे एक गुलाम की तरह जिने का चित्र मिलेगा

कुछ ही ऐसे नारियाँ होंगे जिन्हें घर से बाहर आना तो दूर अपनी आवाज मर्दों के सामने उठाने का मौका मिला होगा। अगर हम प्राचीन केरला के ब्राह्मिन परिवारों कि की बात करें तो वहाँ के महिलाओं के द्वारा सही गयी पीडा के बारे एक पूरी चरित्र सुनने को मिलेगी। उनके लिए घर से बाहर निकलना इतना असंभव था कि वे पढ़ने पाठशालाओं तक नहीं जा पाते थे। बिना पढे एक व्यक्ति को नौकरी मिलना तो छोडो, वें तो अपने तरफ होती अन्यायों को तक पहचान नहीं पाएंगी।

अपने घरों की रसोइयों से नारियों का बाहर आना बहुत कठिन था लेकिन औद्योगिकरण ने उनको बहुत सहायता दुनिया भर में करी। नारियों का नौकरी के क्षेत्रों में आने की वजह से दुनिया भर में एक बडी मात्रा मे नारी सशक्ती

64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code: 645 Participant Code: 043

തീയതി: 17/1/26

कारण देखने को मिली है और उससे आगे चलते-चलते उनको समाज में समानता और अपनी इच्छाओं को पूरा करने का मौका मिले। वे समाज के अनीति के दिवारों को तोड़ने लगे। ऐसे दिवारों को तोड़ के आगे व्यक्तियों का उदाहरण है :- मेरी कोम, विनेश फोगट, द्रौपदी मुर्मु, इत्यादि।

मेरी कोम दो बच्चों की माँ थी जब उन्होंने विश्व मुक्केबाजी चॅमपियनशिप जिता था। यह एक ऐसी बात थी जिसने उस युग की जनता को हिलाकर रख दिया था। विने फोगट की बात करे तो वो भी कुछ कम नही थी। उन्होंने, अपने गाँव के और दुनिया के वे लोग जो मानते कि दंगल लड़कियों की बस की बात नही है, से लड़कर कुश्ती के खेल मे भारत भर मशहूर हुई थी। द्रौपदी मुर्मु भारत के एक छोटे से

आदिवासी गाँव मे रहने वाले बच्चो थी जिसके सपने बडे थे। उनका परिवार उनपर भरोसा नही रखते थे और उनके पती और बच्चों ने उनका साथ छोड दिया था। लेकिन फिर भी उन्होने हार ना मानने का निर्णय लिया और अपने लक्ष्य तक पहुंच गये।

नौकरी के क्षेत्रों मे नारियों के आने से दुनिया को बडे फायदे प्राप्त हुआ है। एक उदाहरण दिया जाए तो 'क्रिस्पर कास' नामक है जीन मे बदलाव लाने वाले तकनीक की बात कर सकते है जिसका आविष्कार दो नारियों ने किया था। यह एक बहुत ही महान तकनीक है जिसके जरिये हम एक व्यक्ति के जीन मे बदलाव बनाकर कान्सर जैसी बीमारियों से अपने आप को बचा सकते है।

नारियों का नौकरी करने से कई परिवारों को आर्थिक स्थिती बेहतर हुई है और बेहतर हो रही है क्यूंकी घर के सदस्य कमा रहे है। नौकरी के मिलने से नारियों का हमारे समाज मे इज्जत बढ़ता है और उन्हे समाज के सामने हिम्मत के साथ अपनी परेशानियों के बारे मे आवाज उठाने का मौका मिलता है। पैसे कमाने से वे खुद के पैरों पर खड़े होने जो पाते है। महिलाओं का और मर्दों का साथ मे रोजगार होने से राष्ट्र की आर्थिक स्थिती और उनकी लोगो की जिन्दगी बेहतर होती है और राष्ट्र विकसित बनता है।

नौकरी के क्षेत्रों मे महिलाओं का प्रवेश पहले के जमानो मे बहुत मुश्किल था। पर आज की बात करा जाए तो ऐसे बहुत सारे परेशानियाँ है जो महिलाएं आज भी

महिलाएं सामना कर रही है। हमारा देश इतना विकसित होने के बाद भी महिलाओं के लिए सुरक्षित नही है। बहुत सारे महिलाएं देश भर मे ऐसे है जिन्हे अपनी शादी होने के कारण अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है। बहु सारे महिलाओं को वे नौकरी करने वाले जगाओं से लैंगिक चूषण और अन्य समस्यों की वजह से छोड़ना पड़ता है। आज भी अगर कोई भारत के किसी पुराने और छोटे गाँव में जाके देखेगा। तो उसे बहुत ज़रूर शैशव विवाह, और उपरीतल शिक्षा नारियों को प्राप्त ना होने कि अमानुषिक संगति मिलेगा। उत्तर भारत मे कई ऐसे भी गाँव है जहां अभी भी सती किया जाता था। भारत का सबसे ज्यादा आबाद शहर मुंबई के धारावी मे बहुत सारे ऐसे घर है जहाँ एक शौचालय तक नही है। एक जगा के हजारों लोग एक शौचालय का इस्तेमाल करते हैं जिसका

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
തിയ്യതി 17/1/26
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

उपयोग करने के लिए उन्हें पैसे देने पड़ते हैं। गन्दगी से भरी शौचालय का इस्तेमाल करने हजारों महिलाएं घंटों तक इन्तजार करते हैं। नौकरी करने के लिए महिलाओं का स्वस्थ होना ज़रूरी है। लेकिन अगर कोई ऐसे हालातों से आएगा तो वह स्वस्थ कैसे रह पाएगा। और वे भी खास ~~उन बच्चों~~ महीने के उन वक्तों में जब उनके शरीर से बहुत खून बाहर निकलता है। इन सब के साथ-साथ भारत में पाई गई जाती व्यवस्था भी नारियों को अपने हुनर को समाज तक पहुचाने नहीं देती। भारत में अगर कोई समाज को सोच प्रकार नीचा दिखायी गयी जाती से हो तो उसका सफाई नौकरियों को छोड़कर अन्य नौकरियों का मिलना कुछ इलाकों में कठिन है। और अगर वह दलित ~~कोई~~ महिला हो तो उसके प्रति लोगों का नफरत और ज्यादा बढ़ता है। उसके

कारण कई ऐसे परिवार है दुनिया भर मे जो अपने बेटियों ~~बहुओं~~ और बहनों को नौकरी करने भेजने से डरते है।

हमारा भारत तभी आगे बढ़ेगा जब हर व्यक्ती आगे बढ़ेगा और इसमे महिलाए भी शामिल है। महिलाओं को नौकरी क्षेत्रो मे आगे बढ़ाने के लिए और उन्हे शिक्षित करने के लिए हमारे सरकार ने बहुत कुछ किया है। इनमे आते है 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जिसका मकसद था भारत की नारियों को शिक्षा देना और इस प्रकार उनको नौकरियाँ दिलाना और उनका जीवन बेहतर बनाना। सरकार द्वारा की गयी 'स्वच्छ भारत अभियान' का भी इसमे बड़ा हिस्सा आता है। इस अभियान के द्वारा सरकार देश भर मे शौचालय बनवा रहे है ताकी हर नारी को हमेशा अपने व्यक्तिगत क्रियाओं

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിയ്യതി 17/1/26
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

को करने की मौका प्राप्त हो और इस प्रकार उनका ई जीवन बेहतर बने।

महिला यानी पूजनीय। संस्कृत मे 'महि' आ अर्थ महान और पूजनीय है जो महिला को उससे जुडती है। एक नारी केवल एक व्यक्ति नही होती। वह किसी की माँ होती है, किसी की बेहन होती है और किसी की बेटी होती है। इसीलिए उनको सम्मान देना और उनसे इज्जत से पेशाना हर एक व्यक्ती का कर्तव्य है। हम उनको मदद करे या ना पर उन्हें कभी कष्ट पहुचाना नही चाहिए। अगर हम उनको मदद करना चाहते है तो ऐसे कई सारी तरीके है जो हम उनको नौकरी के क्षेत्र मे और समाज मे आगे बढाने के लिए कर सकते है। अगर किसी जगह पर हमे यह महसूस होता है कि उनकी जान को खतरा है तो क्या तो हम उनकी सहायता

कर सकते है या पुलिस को बुला सकते है। अगर कोई किसी भी प्रकार की अन्याय से गुजर रहा हो तो हम उन्हे हिम्मत दे सकते है और थाने मे शिकायत लिखवा सकते है। अपने बेटों को हम अच्छे शिक्षा दे सकते है और उन्हे एक अच्छा नागरिक बनाकर नारियों के खिलाफ होने वाले अत्याचारों को रोक सकते है। जाती व्यवस्था को हम समाज से हटा सकते है जिनसे केवल महिलाए ही नही बलकी मर्दों का भी फैदा बनेगा। हम सबको अगल देखने की जगह उन्हे इनसान मान सकते है और उनसे प्यार से पेश सकते है। हमे गंभीर कानून बनाने चाहिए ताकी कोई भी गुनेगार बच निकल न पाए। हमे 'निर्भया' केस के दौरान बनाई गई 'फास्ट्राक-कोर्टों को भारत के हर शहर मे बनवाना चाहिए। हर कारखाने मे और हर नौकरी के क्षेत्र

में समानता बनाके रखना चाहिए और
सबको तुल्य भाव से काम देने चाहिए।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा
था कि "वह बदलाव खुद बने जो आप
इस दुनिया मे देखना चाहते है"।
यह बाते प्रायोगिक है और इन
वाक्यो से गाँधी जी जो हमे बताना
चाहते है वह सच है। अगर हम खुद
बिना बदले दुनिया से बदलने कहेंगे
को उसका कोई भी प्रभाव किसी
पर भी नही होगा। पर हम अपनी
जिन्दगी से दूसरे को दिखा और
समझा जरूर सकते है। अगर हमारा
घर बदलेगा तो घर के साथ-साथ
उस घर के बच्चे भी बदलेंगे जो
हमारे आने वाले कल के वारिस है।
उनके हाथो मे हमारा भारत तभी
सुरक्षित रहेगा जब वे सही और
गलत के बीच के अंतर को जान

~~रहे~~ ले। इसलिए सभी को इस बात पर अपनी सोच को सुधनी चाहिए और एक अच्छे काल के लिए और भारत मे नारियों ~~को~~ के प्रति अत्याचार होने को रोकने के लिये प्रयत्न करना चाहिए। आज इसके साथ हम सब यह प्रतीक्षा करते हैं कि आने वाले दुनिया मे किसी को भी नौकरी के क्षेत्र मे नारी होने के कारण कष्ट सहना पडे और दुनिया और एकता साथ मे बढे और विश्व मे भारत का नाम रोशन करे।

* ——————— *